लोक सम्पर्क विभाग, चण्डीगढ़ प्रशासन

www.chandigarh.gov.in

प्रेस विज्ञप्ति

चण्डीगढ़, 15 मार्च - चण्डीगढ़ प्रशासन की पहल 'चण्डीगढ़ आईटी रीच आउट प्रोग्राम (सिटरोप)' द्वारा बदलाव की नई कहानी लिखी जा रही है। मनीमाजरा के मदरसे में पढ़ने वाले 5वीं से 8वीं कक्षा के 50 से अधिक ऑड विद्यार्थी, जो पहले अंग्रेजी बोलते हुए शर्माते थे, अब न केवल अंग्रेजी बोल और समझ सकते हैं बल्कि कंप्यूटर चलाना भी सीख चुके हैं। प्रशासन द्वारा मुस्लिम समुदाय से संबंधित छात्रों को कौशल से युक्त बनाने हेतु निःशुल्क आईटी और संचार की शिक्षा दी जा रही है। मनीमाजरा के मदरसे में 250 से अधिक विद्यार्थी एनरोल हैं।

आईटी निदेशक श्री एम.एस. बराड़ ने बताया, 'कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में कौशल और आत्मविश्वास का विकास करना है ताकि ये विद्यार्थी जीवन की चुनौतियों का मुकाबला कर सकें। यह मैराथन है कोई स्प्रिंट नहीं। वास्तव में अकुशल कर्मचारी अर्थव्यवस्था में ड्रेन के समान है।' श्री बराड़ ने बताया कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत सबसे पहले छात्रों की अंग्रेजी भाषा की बुनियादी समझ में सुधार पर कार्य किया जाता है। कोर्स की समाप्ति के पश्चात उनका टेस्ट लिया जाता है जिसके बाद उन्हें सी-टॉस कार्यक्रम में प्रशिक्षण के लिए प्रवेश दिया जाता है।

यूटी वित्त व आईटी सचिव श्री संजय कुमार ने बताया कि कंपनियों के विश्व स्तर पर फैलने के कारण कुशल कर्मचारियों की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। किसी भी रोजगार के लिए पेशेवर योग्यता प्राप्त करना अति आवश्यक है इसलिए युवाओं को उचित कौशल से युक्त होना चाहिए।

मदरसा के प्रधानाचार्य मोहम्मद इमरान ने बताया कि हम मदरसा को एक मॉडल स्कूल बनाने की योजना पर कार्य कर रहे हैं ताकि विद्यार्थियों के कौशल को बढ़ाया जा सके और वो चण्डीगढ़ के किसी भी स्कूल के बच्चों से प्रतिस्पर्धा करने के काबिल हो सके।

यूटी प्रशासन द्वारा वर्ष 2007 में इनफोसेस और स्पिक के सहयोग से सिटरोप आरंभ किया गया था और मदरसा में लागू किया गया था। इमरान ने बताया कि कार्यक्रम की सफलता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा और कंप्यूटर्स को सीखने की उत्सुकता बढ़ रही है। इसको देखते हुए हमने विद्यार्थियों को दो बैचों में बांट दिया है और भिन्न-भिन्न समय पर आने के लिए कहा है।

श्री बराड़ ने बताया कि कार्यक्रम के कार्यान्वयन से लेकर अब तक यूटी प्रशासन ने वर्ष 2007-08 में 4.25 लाख रूपये, 2008-09 में 5.88 लाख रूपये और वर्ष 2009-10 में दिसम्बर, 2009 तक 3.59 लाख रूपये खर्च किए हैं। अब तक शोषित वर्ग से संबंधित कुल 2000 छात्रों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।